

दुःश्चिंता—संकल्पना, कारण तथा दूर करने के उपाय

सुनील कुमार

शोधार्थी, पीएच.डी. (एजुकेशन),
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

1.0 दुश्चिंता

अभिप्रेरक, आवश्यकता, प्रोत्साहन, अन्तर्नाद, उद्देश्य इत्यादि तत्त्व सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। इन सब तत्त्वों के अतिरिक्त सीखने की प्रक्रिया को निबद्ध करने वाले कुछ अन्य ऐसे तत्त्व होते हैं जो इस प्रक्रिया गति को धीमा कर देते हैं। यह तत्त्व अधिकतर शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य और वातावरणीय दशाओं में निहित होते हैं। इन तत्त्वों के अन्तर्गत थकान एवं दुश्चिंता प्रमुख हैं। एक अध्यापक को इसके संबंध में भी जानकारी होनी चाहिए ताकि वह उनके प्रभावों को दूर करके अच्छा शिक्षण प्रदान कर सके।

दुश्चिंता की परिभाषा मन की एक प्रकार की बेचैनी या एक प्रकार की आशंका, चिड़चिड़ापन, अनिष्ट के पूर्वाभास या व्यक्ति के आंतरिक जीवन के विक्षोभ से उत्पन्न क्लेश के रूप में दी जाती है।

दुश्चिंता अंग्रेजी भाषा के शब्द 'एक्जाइटी' का हिन्दी अनुवाद है। एक्जाइटी शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द एक्जाइटस से हुई है जिसका अर्थ विभिन्न प्रकार की अनिश्चितता, व्याकुलता तथा भय के मिश्रित अनुभवों से है। 1894 में फ्रायड ने 'एक्जाइटी न्यू न्यूरोसिस' का विवरण दिया।

दुश्चिंता के आशय किसी प्रक्रिया में रुकावट से होता है। एक व्यक्ति, जो दुश्चिंता से पीड़ित होता है, एक कार्य को करने से पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि दुश्चिंता क्रिया में रुकावट डालती है और इस तरह सीखने की गति में कमी भी जाती है, किन्तु यह विचार पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि दुश्चिंता सीखने में रुकावट भी डाल सकती है और प्रेरित भी कर सकती है।

बुग्लेस्की के अनुसार : "अवधान सीखने में एक प्राथमिक तत्त्व है अवधान पुरस्कार की इच्छा, दण्ड से बचने की इच्छा, जिज्ञासा आदि के परिणामस्वरूप होता है, किन्तु अवधान के लिये मूल वस्तु दुश्चिंता है।" बुग्लेस्की का विचार है कि शिक्षक का कार्य आवश्यक सीमा तक दुश्चिंता उत्पन्न करता है। यह एक कठिन प्रश्न है कि कितनी दुश्चिंता उत्पन्न की जाये? क्योंकि यदि दुश्चिंता बहुत अधिक है तो सीखने की स्थिति से बचने को प्रोत्साहित करेगी औ यदि बहुत कम है तो अवधान में कमी आयेगी। बुग्लेस्की के अनुसार का कथन है कि जब विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत की जाती है तो दुश्चिंता उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि जिज्ञासा दुश्चिंता का गुप्त रूप है।

फ्रायड के अनुसार : दुश्चिंता एक ऐसी भावात्मक एवं दुखद अवस्था होती है जो अहं को आलंबित खतरा से सतर्क करता है ताकि वातावरण के साथ अनुकूली ढंग से व्यवहार कर सके।

सुलीवन के निरीक्षणों ने उसे यह विश्वास दिलाया कि दुश्चिंता सम्बन्धी प्रारम्भिक अनुभव शैशवकाल में होते हैं। जब शिशु अपने अभिभावकों में संवेगात्मक तनाव अथवा दुःख देखता है तो उसे दुश्चिंता का अनुभव होने लगता है।

सुलीवन ने देखा कि शिशु ने परेशानी झुंझलाहट के भाव प्रदर्शित किये और खाने से मना कर दिया जबकि उसकी माता उससे अप्रसन्न थी या निराशा से भरी थी। माता और शिशु में निकट का

संवेगात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर होने के कारण माता-पिता को होने वाले कष्टों से बालक धीरे-धीरे इस कदर जुड़ जाता है जिससे स्वतः ही वह दुश्चिन्ता का शिकार हो जाता है।

हमारा अपना व्यवहार भी दुश्चिन्ता उत्पन्न कर देता है। ऐसा उस समय होता है जब बालक अपने को ऐसा व्यवहार करते पाते हैं। जो हमारे अपने आत्म प्रत्यय से असंगत है। वे स्थितियाँ जो अस्पष्ट हैं या भावात्मक होती हैं, दुश्चिन्ता को उभारती हैं। इसी कारण हम भविष्य के लिये योजनाएँ बनाते हैं।

मनोवैज्ञानिक एण्डरसन का कथन है कि जब मानव व्यवहार दुश्चिन्ता से बचाव पर ही आधारित है। व्यक्ति जो कुछ भी करता है, विकल्प चुनता है, प्रतिक्रिया करता है, उसके व्यवहार का प्रत्येक पद और विवरण दुश्चिन्ता को दूर रखने के लिये ही होता है। हम चारों दुश्चिन्ता को महत्व न दें, किन्तु यह तो अवश्य ही है कि हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में विशेषकर दूसरों के साथ संबंधों में दुश्चिन्ता समावेश अवश्य होता है।

एलीसन एवं ऐश के परीक्षण जो चलचित्र से सीखने में, दुश्चिन्ता का प्रभाव ज्ञात करने के लिये थे, द्वारा निष्कर्ष निकाला गया कि दुश्चिन्ता के स्तर को बढ़ाने में परीक्षण से प्राप्तांकों में वृद्धि होती है।

अधिकतर बालक साधारण दुश्चिन्ता का विकास करना सीख लेते हैं। यह उन पर सामाजिक प्रभाव रखती है और बालकों को आत्म नियंत्रण व आत्म निरोध सीखने के योग्य बनाती है। जो बालक दुश्चिन्ता की अधिकता अनुभव करते हैं, वह सीखने में प्रगति नहीं कर पाते। वह इस प्रकार के व्यवहार प्रतिमानों को विकसित कर लेते हैं जो अवांछनीय हैं।

उदाहरण स्वरूप यदि विद्यार्थी परीक्षा में बहुत अधिक दुश्चिन्ता से पीड़ित होते हुए प्रवेश करता है तो वह प्रश्नों को गलत समझ सकता है और इसके अतिरिक्त वह बहुत कुछ सामग्री भूल भी सकता है।

जो बालक दुश्चिन्ता की अधिकता महसूस करते हैं वह सीखने में प्रगति नहीं कर पाते। वह इस प्रकार के व्यवहार प्रतिमान विकसित कर देते हैं जो अवांछनीय हैं। सीखने में मध्यम स्तर की दुश्चिन्ता ही सही प्रभाव डालती है। मध्यम स्तर के दुश्चिन्ता वाले बालकों पर दुश्चिन्ता का ठीक प्रभाव पड़ता है।

कोक्स ने मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में पाँचवीं ग्रेड के विद्यार्थियों को दुश्चिन्ता परीक्षण देकर तीन समूहों क्रमशः उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की दुश्चिन्ता आधार पर विभाजित किया। निष्कर्ष रूप में पाया कि मध्य दुश्चिन्ता वाले समूह का शैक्षिक कार्य दूसरे दोनों समूहों से अच्छा था। सबसे खराब कार्य उच्च दुश्चिन्ता समूह का था।

परीक्षण दुश्चिन्ता से तात्पर्य उस प्रकार की दुश्चिन्ता से होता है जो व्यक्तियों को तनाव की स्थिति में कार्य करने से रोकती है। यह पता लगा कि वह बालक जो 'परीक्षण दुश्चिन्ता' पर अधिक प्राप्तांक प्राप्त करता है, बुद्धि परीक्षा एवं उपलब्धि परीक्षा में कम अंक प्राप्त करता है।

दुश्चिन्ता के क्षेत्र में किये गये अनेक अध्ययनों से कुछ रोचक तथ्य सामने आये, जैसे—उच्च स्तर की दुश्चिन्ता साधारण सीखने में तो सहायक होती है किन्तु जटिल पदार्थों को सीखने में अवरोध डालती है। यह परिणाम शिक्षक के लिये कठिन समस्या उत्पन्न कर देता है। वह निर्धारित नहीं कर पाता है कि कितनी दुश्चिन्ता मध्य स्तर की है और कितनी उच्च स्तर की है। इस संबंध में वह अपना कुछ निर्णय ले भी ले तो उसके लिये अन्य कठिनाई यह है कि कुछ बालक जरा सी दुश्चिन्ता से अपनी सीखने की गति धीमी कर देते हैं और कुछ अधिक दुश्चिन्ता से भी सीखने की गति बढ़ाते रहते हैं। अतएव किस बालक को सीखने की गति बढ़ाने के लिये कितनी दुश्चिन्ता की जाये, यह निर्धारित करना असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य है।

2.0 दुश्चिन्ता के प्रकार :

स्पाइल बर्गर द्वारा दुश्चिन्ता के दो प्रकार बताये गये हैं।

2.1 ट्रेस्ट एग्जाइटी : इस प्रकार की चिन्ता व्यक्तित्व की एक अपेक्षाकृत स्थायी विशेषता है। यह प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न मात्रा में पायी जाती है। व्यक्ति चाहे किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो इस प्रकार की चिन्ता उसमें कुछ न कुछ मात्रा में अवश्य होती है।

2.2 स्टेट एग्जाइटी : इस प्रकार की चिंता कुछ विशिष्ट परिस्थितियों से संबंधित होती है। इसकी तीव्रता में समय-समय पर तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। साधारण रूप से चिंता सभी व्यक्तियों को अनुभव होती है और प्रत्येक किसी न किसी समय इससे अवश्य ही पीड़ित होता है, लेकिन हर व्यक्ति में चिंता की मात्रा अलग-अलग होती है। जब व्यक्ति अकारण ही गंभीर रूप से चिंताग्रस्त हो जाता है तो इसका प्रभाव भी गंभीर रूप से उसके व्यक्तित्व तथा दैनिक जीवन पर पड़ता है। यह अवस्था मनोस्नायु विकृति की अवस्था है और ऐसे व्यक्तित्व को असामान्य व्यक्तित्व की श्रेणी में रखा जाता है।

3.0 फ्रायड ने दुश्चिंता के प्रमुख तीन प्रकार बताये हैं :

वास्तविक दुश्चिंता : बाह्य वातावरण पर अहं की निर्भरता के कारण उत्पन्न ऐसी सांवेगिक अनुक्रिया जो बाह्य वातावरण में व्याप्त वास्तविक खतरे के प्रति की जाती है वह वास्तविक चिंता कहलाती है।

तंत्रिकातापी दुश्चिंता : इस प्रकार की दुश्चिंता की उत्पत्ति उपाह की इच्छाओं पर अहं की निर्भरता से होती है। इसके होने पर व्यक्ति आशंकित रहता है कि अहं उपाह की इच्छाओं को खासकर यौन एवं आक्रामक इच्छाओं को नियंत्रित करने में समर्थ रहेगा।

नतिक चिंता : जब व्यक्ति उपाह की अनैतिक विचारों एवं आवेगों को मूर्त रूप में कर्म द्वारा सम्पन्न करता है तो इस परिस्थिति में पराह द्वारा अहं को दण्डित किया जाता है तो परिणाम स्वरूप व्यक्ति में दोष भाव शर्म एवं आत्म-दोष की भावना उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्षतः ये तीनों प्रकार की चिंताएँ अभिन्न हैं तथा वास्तव में किसी एक प्रकार की दुश्चिंता दूसरे प्रकार की दुश्चिंता को जन्म देती है।

कुछ मात्रा में दुश्चिंता का प्रभाव व्यक्तित्व पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। विद्यालयी छात्रों पर किये गये अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कुछ मात्रा में दुश्चिंता की निष्पत्ति पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। दुश्चिंता के प्रभाव के संदर्भ में लिन्डग्रिन ने कहा है कि, "वास्तव में दुश्चिंता एक आग की तरह है, जो लाभप्रद भी है और खतरनाक भी। यह चिंता की तीव्रता पर निर्भर है।"

4.0 दुश्चिंता के प्रभाव :

- **निर्णय प्रतिक्रिया में बाधा** : चिंता की अवस्था में व्यक्ति को उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहता, जिससे वह वास्तविक मूल्यांकन नहीं कर पाता।
- **ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई** : व्यक्ति किसी विषय पर लम्बे समय तक अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता, क्योंकि अन्य विचार उसके मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। यदि वह ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करता है तो उसके सिरदर्द हो जाता है या उसकी बेचैनी बढ़ जाती है, जिससे ध्यान केन्द्रीकरण में व्यवधान उत्पन्न होता है।
- **हतोत्साह** : जब व्यक्ति में मनोगत्यात्मक निष्क्रियता उत्पन्न हो जाती है तो उसे हमेशा यह लगता है कि अब कुछ बुरा होने वाला है, जिससे किसी कार्य में उसका मन नहीं लगता।
- **अतिसंवेदनशीलता** : संवेदनशीलता की वृद्धि होने पर प्रत्येक स्थिति का अर्थ गंभीरता से लिया जाता है और व्यावहारिकता के अभाव में व्यक्ति चिंताग्रस्त हो जाता है।
- **शारीरिक व्याधियाँ** : सिर दर्द, भूख न लगना, दिल बैठना आदि व्याधियाँ चिन्ता के कारण व्यक्ति में देखी जा सकती है।
- **नींद की कमी** : चिंताग्रस्त व्यक्ति अधिक परेशान रहता है वह ठीक ढंग से नींद नहीं ले पाता।

5.0 दुश्चिंता उत्पन्न होने के मुख्य कारण :

- **किशोरावस्था में तीव्र परिवर्तन :** अज्ञात के भय के रूप में चिंता किशोर के मन में उस अवधि में उत्पन्न हो सकती है जब वह अपने शरीर के परिवर्तित रूप तथा नवीन शारीरिक गुण-धर्मों से अभ्यस्त नहीं हुआ है और न ही जानता है कि आगे क्या परिवर्तन होने वाले हैं। जॉन्स ने किशोर की वृद्धि से संबंधित कुछ संघर्षों की विवेचना की है जो संवेगात्मक कठिनाई उत्पन्न कर सकते हैं।
- **पारिवारिक वातावरण एवं पालन-पोषण विधियाँ :** माता-पिता बच्चों से अधिक आकांक्षाएँ रखते हैं तथा अधिकतर उनका तिरस्कार करते हैं। माता-पिता बालक को भावात्मक सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाते, ऐसे बालकों में चिंताएँ अधिक देखी जा सकती है। हार्नी ने 'बुनियादी चिंता' का उल्लेख करते हुए बताया कि चिंता की उत्पत्ति बालकों में अविश्वसनीय तथा कठोर पर्यावरण का सामना करने के कारण होती है।
- **माता-पिता का व्यक्तित्व :** माता-पिता की तनावपूर्ण व चिन्ताग्रस्त स्थिति बालक को प्रभावित करती है।

जेनकिन्स ने बालकों की व्यवहार विकृति के अध्ययन में पाया कि चिन्ताग्रस्त माता-पिता के बच्चे सामान्य व्यवहार नहीं कर पाते हैं।

इसी प्रकार सुलोवन ने कहा है कि, "माता-पिता के व्यक्तित्व व अभिवृत्ति का प्रभाव बालक पर पड़ता है।" अतः चिंतित माता-पिता के बच्चों के प्रायः चिंतित रहने की संभावना बनी रहती है।

संवेगात्मक विकास :

जिस व्यक्ति का संवेगात्मक विकास सामान्य नहीं होता है, उसमें चिंता के लक्षण प्रकट होते हैं तथा वह आंतरिक तथा बाह्य दबाव व तनाव का सामना ठीक प्रकार से नहीं कर पाता।

6.0 व्यक्तित्व :

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है जिसके कर्मों के आधार पर उसके चिंतन की धारा परिलक्षित होती है तथा उसके अंतर्मन की वास्तविक परिस्थिति के कई लक्षण उसके कृतित्व से सामने आते हैं। अतः किसी व्यक्ति द्वारा किए गये कर्म उसके व्यक्तित्व का आईना होते हैं। विभिन्न कालानुक्रम में व्यक्तित्व को मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक एवं शारीरिक आधार पर परिभाषित करने के प्रयास हुए हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में इसी व्यक्तित्व के आधार पर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

6.1 अर्थ एवं परिभाषा :

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Personality' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'Persona' से हुई है जिसका अर्थ है— नकाब या मुखौटा। प्राचीन काल में यूनानी लोग मंच पर अभिनय के समय नकाब पहनते थे ताकि लोग यह ना जान सकें कि अभिनय करने वाला कौन है? इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखकर व्यक्तित्व को बाहरी वेशभूषा तथा दिखावे के आधार पर परिभाषित किया गया है।

इस अर्थ में व्यक्तित्व का संकुचित रूप स्पष्ट हो जाता है अतः समय-समय पर मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा व्यक्तित्व को एक संगठित गतिशील प्रक्रिया मानते हुए निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया है :

आलपोर्ट के अनुसार : "व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।"

मन के अनुसार : “व्यक्तित्व की परिभाषा व्यक्ति की आकृति, व्यवहार की विधियों, रुचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं और कुशलताओं के सबसे विशिष्ट एकीकरण के रूप में की जा सकती है।”

बिग व हंट के अनुसार : “व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार, प्रतिमान और विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है।”

ट्रेवर के अनुसार : व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित व गतिशील संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।”

6.2 विशेषतायें :

- व्यक्ति का व्यक्तित्व अद्वितीय होता है।
- व्यक्तित्व में विभिन्न गुणों का समन्वय होता है।
- व्यक्तित्व शारीरिक और मानसिक तत्त्वों का समग्र संगठन है।
- व्यक्तित्व मनुष्य के जन्मजात और अर्जित गुणों का संगठन है।
- व्यक्तित्व मनुष्य के वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का प्रतिफल है।

7.0 बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषा :

बुद्धि एक ऐसा सामान्य शब्द है जिसका प्रयोग हम अपने प्रतिदिन के कार्यकलापों के दौरान बोलचाल की भाषा में करते हैं। तेजी से सीखने, समझने अच्छे स्मरण तथा तार्किक चिंतन आदि गुणों के लिये हम सामान्यतः बुद्धि शब्द का प्रयोग करते हैं। बुद्धि एक व्यक्ति की सामान्य मानसिक क्षमता है जिसके द्वारा वह चेतनापूर्वक अपने विचारों का आवश्यकताओं के साथ समायोजन करता है।

मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को समय-समय पर परिभाषित करने के प्रयास किए हैं। सर्वप्रथम बोरिंग (1923) ने बुद्धि की औपचारिक परिभाषा देते हुए बताया कि बुद्धि परीक्षण जो मापता है, वही बुद्धि है। इसके पश्चात् बुद्धि को मुख्यतः तीन आधारों पर परिभाषित किया गया :

- वातावरण से समायोजन
- सीखने की क्षमता
- अमूर्त चिंतन

टरमन के अनुसार : एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिसमें वह अमूर्त चिंतन के योग्य है।

कालविन के अनुसार : एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि रखता है जिस अनुपात में अपने वातावरण में समायोजन की क्रिया सीख चुका है अथवा सीख रहा है।

स्टर्न के अनुसार : नवीन परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की क्षमता बुद्धि है।

मैकडूगल के अनुसार : बुद्धि जन्मजात की प्रवृत्ति को अतीत के अनुसार प्रकाश में सुधारने की योग्यता है।

वास्तव में बुद्धि के अन्तर्गत केवल एक प्रकार की क्षमता सम्मिलित नहीं होती बल्कि इसमें अनेक प्रकार की सामान्य क्षमताओं का योग होता है। इस उद्देश्य के आधार पर कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को कुछ अलग ढंग से परिभाषित किया है :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बुद्धि विभिन्न क्षमताओं का योग या संकुल है जिसके माध्यम से व्यक्ति सामान्य ग्रहणशीलता के विकास द्वारा जीवन की परिस्थितियों में विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है।

7.1 बुद्धि की विशेषताएँ :

- व्यक्ति की जन्मजात शक्ति
- पूर्व अनुभवों से लाभ उठाने की शक्ति
- जटिल समस्याओं और परिस्थितियों को हल करने में सहायक
- नवीन परिस्थितियों में सामंजस्य करने का गुण
- विवेकशील चिंतन एवं अमूर्त चिंतन में सहायक

7.2 बुद्धि के प्रकार

ई.एल. थॉर्नडाइक के अनुसार बुद्धि तीन प्रकार की होती है :

1. सामाजिक बुद्धि
2. अमूर्त बुद्धि
3. मूर्त बुद्धि

7.2.1 सामाजिक बुद्धि : सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य, वैसी सामान्य मानसिक क्षमता से होता है, जिसके सहारे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को ठीक ढंग से समझता है तथा व्यवहार कुशलता से दिखलाता है। ऐसे लोगों का सामाजिक संबंध काफी अच्छा होता है तथा समाज में इनकी प्रतिष्ठा काफी होती है। इनमें सामाजिक कौशल काफी होता है। यह कारण है कि ऐसे व्यक्ति अच्छे नेता बन जाते हैं।

7.2.2 अमूर्त बुद्धि : अमूर्त चिंतन से तात्पर्य वैसी मानसिक क्षमता से होता है, जिसके सहारे व्यक्ति शाब्दिक तथा गणितीय संकेतों एवं चिह्नों के संबंधों को आसानी से समझ जाता है तथा उसकी उचित व्याख्या कर पाता है। ऐसा व्यक्ति जिसमें अमूर्त बुद्धि अधिक होती है, एक सफल कलाकार, पेंटर तथा गणितज्ञ आदि होता है।

7.2.3 मूर्त बुद्धि : मूर्त बुद्धि से तात्पर्य वैसी मानसिक क्षमता से होता है, जिसके सहारे व्यक्ति ठोस वस्तुओं के महत्त्व को समझता है तथा उसकी ठीक ढंग से भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में परिचालन करना सीखता है। इसी तरह की बुद्धि की जरूरत व्यापार एवं भिन्न-भिन्न तरह के व्यवसायों में अधिकतर पड़ती है। ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति एक सफल व्यापारी बन सकते हैं।

8.0 बुद्धिलब्धि :

बुद्धि मापन का सर्वप्रथम प्रयास बिनो एवं साइमन द्वारा 1905 में किया गया जिन्होंने बुद्धि परीक्षण का निर्माण कर बुद्धि को मानसिक आयु के रूप में अभिव्यक्त किया गया। इसी क्रम में 1916 में बिनो-साइमन परीक्षण का सबसे महत्त्वपूर्ण संशोधन स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में टरमैन के द्वारा किया गया तथा मानसिक आयु के स्थान पर बुद्धिलब्धि का प्रयोग आरंभ हुआ।

अनुसंधान एक सरल प्रक्रिया है जिसके द्वारा सुचारु व व्यवस्थित रूप से प्रदत्तों के संग्रहण, सूक्ष्म व्याख्या तथा समस्या के समाधान तक पहुंचा जाता है। अनुसंधान की रूपरेखा एक योजना होती है जो

अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तरों को कारण व चरों का निर्धारण करती है। अनुसंधान की रूपरेखा एक तथ्यपूर्ण व सुव्यवस्थित योजना होती है जो सफल अनुसंधान के लिए निर्देश देती है। अनुसंधान की रूपरेखा बिना विचलन के किसी भी मुख्य योजना का पीछा नहीं करती, परन्तु फिर भी यह एक सही दिशा में कार्य के निर्देश देती है।

अनुसंधान की रूपरेखा एक साधन होती है। उपकल्पनाओं की जांच व प्राप्त प्रदत्तों की व्याख्या करती है। अनुसंधान का ढांचा अनुसंधानकर्ता की इच्छा पर आधारित नहीं होता, अपितु यह उद्देश्यों की जांच, चरों के प्रकार व उस वातावरण जिसमें अनुसंधान शुरू हुआ है, पर आधारित होता है।

8.1 समस्या, कारण एवं दूर करने का समाधान :

अनुसंधानकर्ता को प्रस्तुत समस्या ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को उनकी बुद्धि के आधार पर व्यवसाय में चयन करने के लिए इसकी आवश्यकता अनुभव हुई। यह शोध बुद्धि

के आधार पर बच्चों को उनकी रुचि, योग्यता, अभिवृत्ति व क्षमता के अनुसार उन विषयों को पहचानने में सक्षम हो सकता है, जो उन्हें व्यवसाय के चुनाव में सहायता करे। इस चुनाव से ना केवल व्यक्ति बल्कि समाज भी काफी हद तक प्रभावित होता है। समाज का निर्धारण भी पढ़े जाने वाले व्यवसाय पर निर्भर होता है। जो विद्यार्थी अपनी रुचि व योग्यता के आधार पर व्यवसाय का चुनाव करते हैं, वे ही सफलता प्राप्त करते हैं और देश के आर्थिक विकास में सहायता करते हैं। उदाहरणस्वरूप यदि कोई व्यक्ति किसी उद्योग में कार्य करता है तो वह देश के लिए उत्पादन में वृद्धि करेगा।

8.2 उद्देश्य :

जब कोई कार्य आरम्भ किया जाता है, तो वह किसी उद्देश्य से प्रेरित होकर किया जाता है। उसी प्रकार इस शोध से सम्बन्धित उद्देश्यों का वर्णन इस प्रकार है—

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- शहरी क्षेत्र के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का निम्न बुद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का निम्न बुद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का निम्न बुद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके चयन का अध्ययन।

8.3 उपकल्पनाएं :

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में अन्तर।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का प्रखर बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर का निम्न बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में अन्तर।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर का निम्न बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर का निम्न बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर का निम्न बुद्धि के आधार पर व्यावसायिक चुनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक चयन में अन्तर।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक चयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक चयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक चयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9.0 सन्दर्भ सूची:

1. Viplava, Vinod, ed. *Manasik Rog: Karan Aur Bachav*. Prabhat Prakashan, 2009.
2. Afridi, Ms Humaira M. "HAPPINESS, HOPE AND HUMANITY."
3. Reiss, Steven, et al. "Anxiety sensitivity, anxiety frequency and the prediction of fearfulness." *Behaviour research and therapy* 24.1 (1986): 1-8.